पाठ – नए इलाके में

शब्दार्थ-व्याख्या

1. इन नए ……भूल जाता हूँ

शब्दार्थ –

- इलाका – क्षेत्र
- अकसर – प्रायः, हमेशा

व्याख्या – कवि कहता है कि शहर में नये मुहल्ले रोज ही बसते हैं। ऐसी जगहों पर रोज नये-नये मकान बनते हैं। रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण कोई भी व्यक्ति ऐसे इलाके में रास्ता भूल सकता है। कवि को भी यही परेशानी होती है। वह भी इन मकानों के बीच अपना रास्ता हमेशा भूल जाता है।

2. धोखा दे ……. इकमंजिला

शब्दार्थ –

- ताकता – देखता
- ढहा – गिरा हुआ, ध्वस्त
- फाटक – दरवाजा

व्याख्या – कवि कहता है कि जो पुराने निशान हैं वे धोखा दे जाते हैं क्योंकि कुछ पुराने निशान तो सदा के लिए मिट जाते हैं। कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढ़ने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। फिर कवि पुराने गिरे हुए मकान को ढूँढ़ता है परन्तु वह भी उसे अब कही नहीं दिखता। कवि कहता है कि पहले तो उसे घर का रास्ता ढूँढ़ने के लिए जमीन के खाली टुकड़े के पास से बाएँ मुड़ना पड़ता था और उसके बाद दो मकान के बाद बिना रंगवाले लोहे के दरवाजे वाले इकमंजिले मकान में जाना होता था। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि को अब बहुत से मकानों के बन जाने से घर का रास्ता ढूँढ़ने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

3. और मैं ……..भरोसा नहीं

शब्दार्थ –

ठकमकाता – धीरे-धीरे, डगमगाते हुए

स्मृति – याद

व्याख्या – कवि कहता है कि अपने घर जाते हुए वह हर बार या तो अपने घर से एक घर पीछे ठहर जाता है या डगमगाते हुए अपने घर से दो घर आगे ही बढ़ जाता है। कवि कहता है जहाँ पर रोज ही कुछ नया बन रहा हो और कुछ मिटाया जा रहा हो, वहाँ पर अपने घर का रास्ता ढूँढने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकते।

egyanarchive

4. एक ही दिन …….. ऊपर से देखकर।

शब्दार्थ –

- वसंत – छह ऋतुओं में से एक
- पतझड़ – एक ऋतु जब पेड़ों के पत्ते झड़ते हैं
- वैसाख (वैशाख) – चैत (चैत्र) के बाद आने वाला महीना
- भादों – सावन के बाद आने वाला महीना
- अकास (आकाश) – गगन

व्याख्या – कवि कहता है कि एक ही दिन में सब कुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसा लगता है जैसे महीनों बाद लौटा हूँ। ऐसा लगता है जैसे घर से बसंत ऋतु में बाहर गया था और पतझड़ ऋतु में लौट कर आया हूँ।

जैसे बैसाख ऋतु में गया और भादों में लौटा हो। कवि कहता है कि अब सही घर ढूँढने का एक ही उपाय है कि हर दरवाजे को खटखटा कर पूछो कि क्या वह सही घर है। कवि कहता है कि उसके पास अपना घर ढूँढ़ने लिए बहुत कम समय है क्योंकि अब तो आसमान से बारिश भी आने वाली है और कवि को उम्मीद है कि कोई परिचित उसे देख लेगा और आवाज लगाकर उसे उसके घर ले जाएगा।

5. नई गलियों के …… रचते हैं हाथ!

शब्दार्थ –

- नालों – घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाया गया रास्ता
- कूड़ा-करकट – रद्दी, कचरा
- टोले – छोटी बस्ती

व्याख्या – कवि कहता है कि अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। अगरबत्ती हालाँकि पूजा पाठ में इस्तेमाल होती है लेकिन इसकी खुशबू ही शायद वह वजह होती है कि लोग इसे प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं।

इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर है। ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार और बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप होता है। ऐसे स्थानों पर कई कारीगर अपने हाथों से अगरबत्ती को बनाते हैं।

6. उभरी नसोंवाले …….. खुशबू रचते हैं हाथ!

शब्दार्थ –

- शख्म – घाव, चोट

egyanarchive

व्याख्या – कवि कहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं। कवि कहता है कि दूसरों के लिए खुशबू बनाने वाले खुद न जाने कितनी और कैसी तकलीफों का सामना करते हैं।

7. यहीं इस गली ……. खुशबू रचते हैं हाथ।

शब्दार्थ –

- मुल्क – देश
- केवड़ा – एक छोटा वृक्ष जिसके फूल अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं
- खस – पोस्ता
- रातरानी – एक सुगंधित फूल
- मशहूर – प्रसिद्ध

व्याख्या – कवि कहता है कि इसी तंग गली में पूरे देश की प्रसिद्ध अगरबत्तियाँ बनती हैं। उस गंदे मुहल्ले के गंदे लोग (गरीब लोग) ही केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी की खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनाते हैं। यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

प्रश्न-अभ्यास

नए इलाके में

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?

(ख) कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?

(ग) कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?

(घ) 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?

(ङ) कवि ने इस कविता में 'समय की कमी की ओर क्यों इशारा किया है?

(च) इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

उत्तर-

(क) कवि नए बसते इलाकों में रास्ता इसलिए भूल जाता है क्योंकि यहाँ नित नया निर्माण होता रहता है। नित नई घटनाएँ घटती रहती हैं। अपने ठिकाने पर जाने के लिए जो निशानियाँ बनाई गई होती हैं, वे जल्दी ही मिट जाती हैं। पीपल का पेड़ हो या ढहा हुआ मकान या खाली प्लाट, सबमें शीघ्र ही परिवर्तन हो जाता है। इसलिए वह प्रायः रास्ता भूल जाता है।

(ख) कविता में निम्नलिखित पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है

egyanarchive

- पीपल का पेड़
- ढहा हुआ घर
- जमीन का खाली टुकड़ा।
- बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला इकमंजिला मकान।

(ग) कवि अपने निर्धारित घर से एक घर पीछे यो आगे इसलिए चल देता है क्योंकि उसे घर तक पहुँचाने वाली निशानियाँ मिट चुकी हैं। उसने एक इकमंजिले मकान की निशानी बना रखी थी जिस पर बिना रंग वाला लोहे का फाटक था। परंतु अब न वह फाटक रहा न वह मकान इकमंजिला रहा। इसलिए वह अपने निश्चित लक्ष्य को ढूँढता-ढूंढता आगे या पीछे चला गया।

(घ) "वसंत का गया पतझड़ को लौटा' का अभिप्राय है-एकाएक परिवर्तन हो जाना। आने और जाने के समय में ही परिवर्तन हो जाना।
'बैसाख का गया भादों को लौटा' का अभिप्राय है-कुछ ही समय में एकाएक परिवर्तन हो जाना। जाने के समय और लौटने के समय में ही अद्भुत परिवर्तन हो जाना।

(ङ) इस कविता में कवि ने समय की कमी की ओर इशारा किया है। लोग हरदम कुछ-न-कुछ करने, बनाने और रचने की जुगाड़ में लगे रहते हैं। इस अंधी प्रगति में उनकी पहचान खो गई है। वे स्वयं को भूल गए हैं। इसके कारण उनके भीतर एक डर समा गया है कि कहीं वे अकेले तो नहीं रह गए हैं। क्या कोई उन्हें पहचानने वाला मिल जाएगा या नहीं। लोगों के पास इतनी फुरसत नहीं है कि वे इस अंधे निर्माण से समय निकालकर एक-दूसरे के साथ आत्मीयता जोड़ सकें।

(च) इस कविता में कवि ने शहरों की निरंतर गतिशीलता, कर्मप्रियता और निर्माण की अंधी दौड़ के कारण खोती आत्मीयता का चित्रण किया है। शहरों में नई-नई बस्तियाँ, नए-नए निर्माण तो रोज हो रहे हैं किंतु उनकी पहचान और आत्मीयता नष्ट हो रही है।

प्रश्न 2. व्याख्या कीजिए-

(क) यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

उत्तर -

व्याख्या- आज दुनिया में इतनी तीव्र गति से बदलाव हो रहा है कि साल भर का बदलाव एक दिन में हो जाता है। इस बदलाव को देखकर अपनी जानी-पहचानी वस्तुएँ भूलने का भ्रम होने लगता है। यहाँ तक कि सुबह का गया शाम को

लौटने पर वह अपना मकान न ढूंढ़ पाने पर लगता है कि एक ही दिन में पुरानी पड़ गई है, क्योंकि कल तक तो कुछ न कुछ फिर नया बन जाएगा।

(ख) समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर

उत्तर-

व्याख्या- कवि कहता है कि तेजी से बदलती दुनिया और उसके साथ तालमेल बिठाने के क्रम में लोगों के पास समय बहुत कम बचा है। कवि देखता है कि आकाश में काले बादल छाये चले आ रहे हैं। वर्षा की पूरी संभावना है। ऐसे में लोग छतों पर आएँगे। अब उनमें से कोई कवि को पहचानकर पुकार लेगा कि आ जाओ, तुम्हारा घर यहीं है, जिसे तुम खोज नहीं पा रहे हो।

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. पाठ में हिंदी महीनों के कुछ नाम आए हैं। आप सभी हिंदी महीनों के नाम क्रम से लिखिए-

उत्तर-

1. चैत्र
2. बैसाख
3. ज्येष्ठ
4. आषाढ़
5. श्रावण
6. भाद्रपद
7. आश्विन
8. कार्तिक
9. मार्गशीर्ष
10. पौष
11. माघ
12. फाल्गुन

egyanarchive

खुशबू रचते हैं हाथ

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) 'खुशबू रचने वाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ-कहाँ रहते हैं?

उत्तर- 'खुशबू रचने वाले हाथ' घोर गरीबी, अभावग्रस्त और अमानवीय परिस्थितियों में गंदे नाले के किनारे कूड़े-करकट के ढेर के पास छोटी-छोटी बस्तियों की तंग और गंदी गलियों में रहते हैं। वहाँ की बदबू से लगता है कि नाक फट जाएगी।

(ख) कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?

उत्तर- कविता में कई प्रकार के हाथों की चर्चा की गई है-

- उभरी नसों वाले हाथ अर्थात् वृद्ध मजदूरों के हाथ।
- घिसे नाखूनों वाले हाथ अर्थात् मजदूर वर्ग के हाथ।
- पीपल के नए पत्ते जैसे हाथ अर्थात् कम उम्र के बच्चों के हाथ।
- जूही की डाल जैसे हाथ अर्थात् नवयुवतियों के सुंदर हाथ।
- कटे-पिटे और जख्मी हाथ अर्थात् मालिक द्वारा शोषित एवं सताए मजदूरों के हाथ।

(ग) कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'?

उत्तर- 'खुशबू रचते हैं हाथ' ऐसा कवि ने इसलिए कहा है जिन हाथों द्वारा दुनिया भर में खुशबू फैलाई जाती है, वे हाथ गंदे हैं, गंदी जगहों पर रहते हैं और अभावग्रस्त जीवन जीने को विवश हैं।

(घ) जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

उत्तर- जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है वहाँ का वातावरण अत्यंत गंदा होता है। गंदे नाले से उठती बदबू, चारों ओर कूड़े के ढेर से उठती बदबू से दुर्गंध फैली होती है। इस बदबू से ऐसा लगता है जैसे नाक फट जाएगी।

(ङ) इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर- इस कविता को लिखने है का उद्देश्य है-समाज के मजदूर वर्ग और अन्य लोगों के बीच घोर विषमता का चित्रण तथा दुनिया भर में अपनी बनाई अगरबत्तियों के माध्यम से सुगंध फैलाने वाले मजदूर वर्ग का घोर गरीबी में गंदगी के बीच जीवन बिताना तथा समाज द्वारा उनकी उपेक्षा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कराना।

प्रश्न 2. व्याख्या कीजिए-

(क) (i) पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ

उत्तर- कवि अगरबत्तियाँ बनाने वाले मजदूरों के बारे में बताता है कि इस उद्योग में पीपल के नए पत्ते जैसे सुकोमल हाथ वाले लड़कों तथा जूही की डाल जैसे नव युवतियों के सुंदर हाथों को भी काम करना पड़ रहा है। अर्थात् बाल श्रमिक भी कार्यरत हैं।

(ii) दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू

रचते रहते हैं हाथ

उत्तर- कवि ने इन पंक्तियों में खुशबू बनाने वाले मजदूरों के बारे में बताया है कि ये मजदूरों को दुनिया की सारी गंदगी के बीच रहने को विवश हैं। ऐसे गंदे स्थानों पर रहकर वे सारी दुनिया में सुगंध बिखेरते हैं। ये मज़दूर गंदी जगहों पर रहकर गंदे हाथों से काम करके दुनिया को खुशी और सुगंध बाँट रहे हैं।

(ख) कवि ने इस कविता में 'बहुवचन' का प्रयोग अधिक किया है? इसका क्या कारण है?

उत्तर- इस कविता में कवि ने बहुवचन का प्रयोग इसलिए किया है, क्योंकि ऐसे उद्योगों में काम करना किसी एक जगह की नहीं बल्कि अनेक देशों की समस्या है और इनमें बहुत-से मज़दूर काम करने को विवश हैं।

(ग) कवि ने हाथों के लिए कौन-कौन से विशेषणों का प्रयोग किया है?

उत्तर- कवि ने हाथों के लिए कई विशेषणों का प्रयोग किया है; जैसे-

- उभरी नसों वाले
- घिसे नाखूनों वाले
- पीपल के पत्ते से नए-नए
- जूही की डाल जैसे खुशबूदार
- गंदे कटे-पिटे
- ज़ख्म से फटे हुए

योग्यता-विस्तार

प्रश्न 1. अगरबत्ती बनाना, माचिस बनाना, मोमबत्ती बनाना, लिफ़ाफ़े बनाना, पापड़ बनाना, मसाले कूटना आदि लघु उद्योगों के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

उत्तर- 1. अगरबत्ती बनाना

सामग्री: बांस की काठियाँ, अगरबत्ती पाउडर (कोयला पाउडर, लकड़ी की धूल, गोंद पाउडर), सुगंधित तेल

विधि: बांस की काठी पर पाउडर का मिश्रण चढ़ाया जाता है, फिर इसे सूखाकर सुगंधित किया जाता है।

उद्योग का लाभ: धार्मिक स्थलों, घरों, पूजा-पाठ में अधिक मांग होती है।

---

2. माचिस बनाना

सामग्री: लकड़ी की तीलियाँ, सल्फर, पोटेशियम क्लोरेट, फास्फोरस

विधि: लकड़ी की तीलियों को रसायनों में डुबोकर सुखाया जाता है, फिर डिब्बों में पैक किया जाता है।

उद्योग का लाभ: घरेलू उपयोग में रोज़ाना काम आने वाली वस्तु है।

---

egyanarchive

3. मोमबत्ती बनाना

सामग्री: पैराफिन वैक्स, धागा (विक), सांचे

विधि: मोम को गर्म कर पिघलाया जाता है, फिर उसे सांचों में डाला जाता है जिसमें पहले से बत्ती रखी जाती है।

उद्योग का लाभ: बिजली कटौती, पूजा, सजावट आदि में इसका उपयोग होता है।

---

4. लिफ़ाफ़े बनाना

सामग्री: कागज़, गोंद, छपाई सामग्री

विधि: कागज़ को काटकर उचित आकार में मोड़ा जाता है, गोंद की सहायता से चिपकाकर लिफ़ाफ़ा बनाया जाता है।

उद्योग का लाभ: कार्यालयों, स्कूलों, सरकारी कार्यों में बहुत ज़रूरत होती है।

---

5. पापड़ बनाना

सामग्री: उरद की दाल, मसाले, नमक, पानी

विधि: दाल पीसकर उसका आटा गूंथा जाता है, छोटे-छोटे पापड़ बेलकर धूप में सुखाया जाता है।

उद्योग का लाभ: घरों में भोजन के साथ, होटल व बाजार में इनकी मांग बनी रहती है।

---

6. मसाले कूटना (तैयार करना)

सामग्री: साबुत मसाले (हल्दी, धनिया, मिर्च, जीरा आदि)

विधि: मसालों को अच्छे से साफ कर सुखाया जाता है, फिर पीसकर पाउडर बनाया जाता है।

उद्योग का लाभ: हर रसोई में मसालों की ज़रूरत होती है, जिससे इसका व्यापारिक उपयोग बहुत ज़्यादा है।

egyanarchive